بسم الله الرحمن الرحيم

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

25 October 2019 26 Safar 1441 AH

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम

EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

राजनीति में मुसलमान (भाग-1)"

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ने के बाद और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया।

राजनीति में मुसलमान- भाग-1

मुसलमानों को बुराई का आदेश देने का अधिकार नहीं है, लेकिन उन्हें किसी से भी मिलाप नहीं करना चाहिए (समर्थन / अनुमोदन)। यह देखने के बाद कि हमारे आसपास क्या हो रहा है, हमें कभी भी एक मुस्लमान महिला को मतदान नहीं देना चाहिए, जो वास्तव में, खुद में दीन-ए-इस्लाम को प्रतिबिंबित नहीं करती है [अगर मुस्लमान महिला सख्ती से इस्लाम के नियमों का पालन उसके व्यवहार, कपड़े और बोलने और ज्ञान और उसकी मर्यादा का सम्मान करने में करती है तो यह निंदनीय नहीं है]। दीन की अज्ञानता से, वह उन चीजों को करेगी, जो अल्लाह के क्रोध को उस पर आकर्षित करेगा, और जिन लोगों ने उसे वोट दिया उसके लिए अल्लाह के पास उनका खाता होगा।

एक मुसलमान वह है जो न तो नुकसान पहुँचाता है और न ही बुराई करता है। जब तक ये बहन [इस्लाम में] अल्लाह के प्रति अवज्ञा करती है, इस मामले के जवाबदेही में हमारा हिस्सा है जिसमे हमने उसे उसमें [सरकार में] डाला । कौन दूसरों के पापों का बोझ स्वीकार करेगा? पाँच साल तक वह सत्ता में बनी रहेंगी। वोट देने से पहले दस बार सोचो। एक मुसलमान एक ही छेद में दो बार नहीं गिरता।

मुस्लमान समुदाय ने कभी भी मुस्लमान प्रतिनिधि के बचाव करने के लिए [महिलाओं, साथ ही पुरुषों] प्रतिनियुक्त नहीं किया है। इस देश में लगभग सभी मुसलमान जानते हैं कि यह वर्तमान सरकार कितना मुसलमान विरोधी है, सिवाय इसके कि किसी ने उसके साथ अपने अस्तव्यवस्था के हिस्से को पा लिया हो, और हर समय वहाँ ऐसे लोगों का वर्ग है जो उम्माह और उसके देश के हित के बजाय अपने हित के लिए लड़ते हैं। आपने देखा कि सत्ता की उस बहुमत वाली पार्टी में कितने मुसलमान थे, उस गठबंधन के साथ, जिसे उन्होंने [प्रधानमंत्री] बनाया था, और आपने देखा कि उसने कैसे थोड़ा-थोड़ा करके अपने आसपास के मुसलमानों से छुटकारा पा लिया हैं! लेकिन दूसरी तरफ उसकी अपनी खुद की पार्टी और सरकार में, बहुमत से संबंधित अन्य [धार्मिक] समुदाय के लोग हैं, जिनके विभिन्न दोषपूर्ण कार्रवाई होने के बावजूद, लेकिन उन्हें दंडित करने के लिए कुछ भी नहीं किया गया है! मॉरीशस के मुसलमान समुदाय पर जो बीत रही है वही नीति भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) भारत में लागू कर रही है [मुसलमानों के खिलाफ]।

अब तक, मुस्लमान समुदाय ने कभी भी मुस्लमान महिला को संसद या सरकार में प्रवक्ता बननें का आज्ञापत्र नहीं दिया। इस्लाम के दायरे में, एक मुस्लमान महिला को राज्य के मुखिया होने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह पुरुष तक पर्यत है, इस जिम्मेदारी को लेने के लिए वरिष्ठ प्राणी है [अल्लाह की दृष्टि

में और पवित्र कुरान के स्वरूप में स्थापित है]। इसके अलावा, कोई भी राजनीतिक दल कि मुसलमान महिला, शरीयत से बहुत दूर है। उनकी पोशाक संहिता और उनकी मुस्लमान विरोधी गतिविधियों में भागीदारी [उस मामले में मुस्लमान पुरुषों के रूप में] उन्हें मुस्लमान समुदाय के प्रतिनिधि बननें के लिए अनुमति नहीं देते हैं।

मुस्लमान समुदाय अपने इतिहास में मुश्किल दौर से गुजर रहा है, लेकिन हमें उम्मीद है कि अल्लाह हमारी मदद करेगा और भविष्य में हमारे पास ईमानदार लोग होंगे जो दिल से इस पीड़ित समुदाय का हित करेंगे - ऐसा समुदाय जो बहुत पीड़ित है और परित्यक्त है - और जो वास्तव में अपने हितों की रक्षा करेगा। इस वर्तमान सरकार में, मुस्लिम समुदाय एकमात्र समुदाय है जिसके पास प्रवक्ता नहीं है। यहाँ तक कि जिन लोगों ने इस समुदाय का उपयोग इस सत्ता आने के लिए किया है, वे हमें नजर अंदाज कर रहें है, लेकिन यह स्पष्ट है [ध्यान रखें] कि अल्लाह कभी भी उसके सेवकों को नहीं छोड़ेगा। इस समुदाय के लोगों के मतों के द्वारा वे चुने गए हैं, उनके लिए जो खुद को उनके बाद राष्ट्रवादी घोषित करते हैं, उनके सत्ता के दिन जल्द ही खत्म हो जायेंगें, इंशा-अल्लाह, आमीन।

हम उनके [निर्वाचक सम्बन्धी] अभियान के मध्य मजबूती से उनका इंतजार कर रहे हैं जब वे मतों को मांगने आएंगे। इसलिए, उन्हें इस समुदाय से वोट [मुस्लिम समुदाय] मांगने आने से पहले सावधानी से सोचना होगा। कई मुस्लिम राजनेता खुद को अपने संबंधित पक्षों के प्रति वफादार घोषित करते हैं। वहाँ कई दल हैं जिनके नियम शरिया के खिलाफ भी हैं। ये मुसलमान मर्द / महिलाएं उनके तथाकथित नेता की खुशामदी करते हैं। यहाँ तक कि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो इस्लाम के विरोधी कानूनों के मुताबिक वोट देकर इस्लाम की शिक्षाओं के खिलाफ गए थे। उनकी पार्टी को खुश करने के लिए, वहाँ वे हैं जिन्होंने मुस्लिम व्यक्तिगत कानून के खिलाफ मतदान किया था। लेकिन वे भूल जाते हैं कि अल्लाह ने काफ़िर (अविश्वासी), मुशरिक (बहुदेववादी) और मुमिन (विश्वास करनेवाला) के बीच विभेदित किया है। विश्वासियों को हानि पहुँचाने के लिए उन्होंने अविश्वासियों (कुफ़र) को दोस्त बनाया । वे अपने समुदाय के पक्ष में आवाज उठाने की हिम्मत नहीं रखते है।

मैं आपको एक उदाहरण दे रहा हूँ कि कैसे मुस्लिम राजनेता मर्द / महिलाएं खुशामदी करने वाले बन गए हैं। किसी ने भी मुस्लिम समुदाय के पक्ष में ईद-उल-अधा (बकरा-ईद) के दिन सार्वजनिक अवकाश की अपील भेजने का साहस नहीं किया। ये हमारा सबसे बड़ा त्योहार है; बलिदान करने की ईद जिसे हम तीन दिनों तक मनाते हैं। भले ही तीन दिनों में से प्रत्येक दिन सार्वजनिक अवकाश रखना संभव नहीं है, लेकिन कम से कम पहले दिन के लिए [जो महत्वपूर्ण है], उन्हें इस पर चर्चा करनी चाहिए थी ताकि हमारे पास ये दिन सार्वजनिक अवकाश के तौर पर हो, लेकिन इसके बजाय उनमें यह सब करने की हिम्मत नहीं थी।

हमारे कई भाई-बहन उस दिन [बकरीद के पहले दिन] काम करने को मजबूर होते हैं। यह मुसलमानों के खिलाफ एक अन्याय है, और ये सब उनकी छुट्टियों के लिए, मैं किसी अन्य धार्मिक संप्रदाय की

आलोचना के बिना कह रहा हूँ, क्योंकि उनके पास दो या तीन दिनों से अधिक सार्वजनिक छुट्टियों है! यह सारा सर अन्याय है! उसके बाद वे कहते हैं, एक लोग, एक राष्ट्र? ज्ञात होते हुए, मुसलमान [विभिन्न राजनीतिक दलों में] जानते हैं कि हमारे समुदाय को रौंदा जा रहा है, लेकिन इससे उनमें कोई अंतर नहीं किया जा सकता है। उनके लिए अपने फायदे के लिए काम करना मायने रखता है। न्याय करने में मदद करने के लिए उनके काम से लाभ उठाना और अपने समुदाय की आवाज को सुनने के लिए, वहाँ कोई रास्ता नहीं हैं वे यह कर रहे हैं! लेकिन, बल्कि वे अपनी रुचि के लिए लड़ना पसंद करते हैं: पैसा और सांसारिक सम्मान।

इन कई राजनेताओं में से मुस्लिम नाम वाले अक्सर इन दो चीजों का आनंद नहीं लेते हैं।
और इतिहास यह साबित करने के लिए काफी है कि हम जो अल्लाह के लिए कह रहे हैं वह न्यायोचित है। और अचानक जब इन मुस्लिम राजनेताओं को उनके [राजनीतिक] पार्टी द्वारा अपमानित किया जाता है, इसके बाद ही वे अपने समुदाय (मुस्लिम समुदाय) की ओर मुड़ते हैं ।वे उनके जैसे हैं जो अल्लाह के बारे में नहीं सोचते, और मज़े करते हैं और यह तब होता है जब वे खुद को बड़ी मुश्किल में पाते हैं वह अल्लाह को पुकारते हैं, रोते हुए कहते हैं: "हे अल्लाह, हे अल्लाह!" ये मुस्लिम राजनेता उन लोगों की तरह दिखते हैं और रोते हुए कहते हैं, "हे उम्माह, हे उम्माह! " बहुत देर हो चुकी है, क्योंकि उनका राजनीतिक शासनादेश खत्म हो गया है, और उनके झूठे नेता उन्हें **फिर कभी वापस से नहीं लेंगें** क्योंकि उनके पास एक गुप्त कार्यावली है।

राजनीतिक रूप से वे मर चुके हैं लेकिन कम से कम आध्यात्मिक रूप से उन्हें अब जागना होगा। उनको जरूर उनके इतिहास से सबक लेना चाहिए। शॉल [ओरनी / हिजाब] सिर पर हो, अराफत के रास्ते पर, हाजियों आदि के लिए पथप्रर्दशक बने। उनके पास वो सब करने की क्षमता है, लेकिन क्या वे ऐसा कर रहे हैं, और यदि वे यह कर रहे हैं, तो वे यह कैसे कर रहे हैं?आध्यात्मिक रिश्वत के लिए सांसारिक के बारे में सोचें, या क्या वे अब महसूस करते हैं कि उन्हें पश्चाताप करना चाहिए और अपने जीवन में एक सच्चे मुसलमान की तरह सुधार करना चाहिए जिन्हें ईश्वर (तक्वा) का भय हो ?

हमने नई पीढ़ी के मुस्लिम राजनेताओं को हमारे अतीत में क्या हुआ है यह जानने के लिए छोड़ दिया क्योंकि इतिहास एक दर्पण है। और सोचें कि ये लोग कभी भी आपके पक्ष में नहीं लड़गें। इसके बारे में सोचें और आप देखेंगे कि हम सही हैं।आखिरकार, हम ऐसा नहीं कहते हैं, लेकिन यह निर्माता है जो यह सब कहता है।

एक सलाह: जिन लोगों को उनकी पार्टी द्वारा निकाल दिया गया / अस्वीकार कर दिया गया, उनके पास वापस मत जाईये!

जब हम लोगों के प्रति कुछ मंत्रियों के व्यवहार को देखते हैं, तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक बार उनके सत्ता में आने के बाद, वे उन लोगों को भूल जाते हैं। वहाँ ऐसे गरीब लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन में

कभी भी भीख नहीं मांगी और सम्मान के साथ मर गए, लेकिन वहाँ कितने मंत्री थे जिन्हें शर्म के साथ अपनी मंत्री की कुर्सी छोड़नी पड़ी! तथा वे भूल जाते हैं कि कितनी बार उन्होंने घर-घर जाकर भीख माँगी है ताकि वे मंत्री की कुर्सी पर वापस बैठ सकें [यानी सत्ता में वापस आने के लिए]। एक बार निर्वाचित होने के बाद में, वे खुद को सत्ता में पांच साल के लिए मालिक के रूप में लेते हैं। और इस देश में, जहाँ हर मंत्री [एक निश्चित धार्मिक आस्था का] एक ही धर्म के लोग अपने साथी की रक्षा करता है, यह केवल मुस्लिम समुदाय है जो किसी भी शासन-काल में जो इस देश में सत्ता में आता है गरीब बच्चा बन जाता है, जो साम्प्रदायिकता के साथ इसके हर नुक्कड़ और दरार पर दुर्गन्धित कर रही है । जो मुसलमान मंत्रालयिक कार्यालयों में बैठते हैं, जो हम कह रहे हैं, उसका विरोध नहीं कर सकते।

इसलिए यह कहते हैं, हर बार मुस्लिम समुदाय का एक सदस्य सत्ता से आ रहे अन्याय का शिकार होता है, राज्य अपने कान बहरों में तब्दील कर लेता है। यह व्यक्ति उसकी आवाज को सुनाने के लिए संघर्ष करता है।

अल्हम्दुलिल्लाह, की वहाँ निजी रेडियो हैं, अन्यथा अल्लाह (स व त) भी जानता है कि कैसे इस देश में अल्पसंख्यकों का बहुत नुकसान होगा। और यहाँ फिर से, जब निजी रेडियो स्टेशन अपना काम ठीक से कर रहे हैं, वर्तमान प्रधान मंत्री और उनकी सरकार [पदावरोहि सांसद के सदस्य] उन्हें धमकी दे रहे हैं। इस चुनावी अभियान में भी, वहाँ बहुत सारे तिरस्कार किये गए हैं जिसे सार्वजनिक रूप से एक निजी रेडियो स्टेशन के खिलाफ शुरू किया गया था, एक प्रधानमंत्री से कुछ बहुत ही गंभीर मानहानिकारक तिरस्कार होते है जो कहता है कि वह शिक्षित है - और वह इस तरह की खराब भाषा का उपयोग करता है - जब प्रश्न में रेडियो ने उसके गलत कामों की निंदा करना शुरू कर दिया, और इसलिए, अगर यह वापस सत्ता में आ गया,तो यह निजी टेलीविजन प्रमोचन करने के लिए हरी बत्ती को कभी नहीं दिखाएगा।

एम बी सी टीवी (MBC TV) राजा का उपकरण (साधन) है, और राजा हमेशा एक समुदाय के होता हैं। अब तक हम सभी अपने बिजली के बिलों का भुगतान करते हैं, जहाँ हम रु 150-200 का [अनिवार्य] शुल्क एम बी सी टीवी (MBC TV) के लिए देते हैं। दूसरी ओर, निजी रेडियो मुफ्त है। यह कहने के लिए सूची बहुत लंबी है कि कैसे अल्पसंख्यक वर्ग और विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय [मुस्लमान] लगभग सभी क्षेत्रों में बहुत पीड़ित हैं। अगर हम अपने मुस्लिम समुदाय के साथ अन्याय और इसकी पीड़ा का एक-एक करके बताना शुरू करें, तो सूची बहुत लंबी होगी।

इसलिए मैं अपने मुस्लिम समुदाय के सभी भाइयों और बहनों से याचना करता हूँ, चलिए कुछ चीजों पर हम हमारे मतभेद भूल जाते हैं। आइए हम खुद को एक मुसलमान के रूप में एकजुट करने की सोचें [एक शरीर की तरह], और हम सभी, मुसलमानों के रूप में, हम अल्लाह के लिए सलात (प्रार्थना) करते हैं और मजबूती से इस्लाम के पांच स्तंभों पर विश्वास करते हैं। और हम दृढ़ता से खुद को इस पर स्थापित करते हैं: **ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसुल्लाह**। यह मुख्य और मुलभुत बात है और हमें

एक उम्मा, एक परिवार के रूप में एकजुट हो जाना चाहिए, जहाँ अल्लाह की एकता में हमारा विश्वास दृढ़ है और हमें खुद को विभाजित नहीं करना चाहिए [क्योंकि अन्य लोग हमें विभाजित करना और खुद को आतंकवादी के रूप में पहचान कराना चाहते हैं] और हमें खुद को अलग नहीं करना चाहिए। यही दूसरे चाहते हैं। वे हमें विभाजित करने के लिए सब कुछ करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि यदि हम एकजुट होकर रहेंगें, कोई भी हम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा। वास्तव में, एकता हि ताकत है, और मुस्लिम समुदाय के शीर्ष पर एक आध्यात्मिक नेता होगें, जो **रूहिल कुद्दुस** [पवित्र आत्मा] के साथ अल्लाह का चुनाव होगा, जो अल्लाह की ओर से आता है और वहाँ मुस्लिम समुदाय की प्रगति के लिए दोनों भौतिक और आध्यात्मिक शब्दों में शांति और सर्व- सम्मत आज्ञाकारिता होगी। इंशा अल्लाह।

प्राणी पर अपना भरोसा मत रखो, लेकिन अपने निर्माता में अपने विश्वास और आशा को रखो। और अब विशेष रूप से जब आप सभी इस शासन-काल के दुष्कर्मों के बारे में जानते हैं, जहाँ [पहले] इसमें (मुस्लमान के निजी कानून) मुस्लिम पर्सनल लॉ (एम पी एल) को हटा दिया गया था और यहाँ तक कि इन दिनों, जो लोग एम पी एल के तहत विवाहित थे, उनकी वैवाहिक स्थिति विधिमान्य नहीं है [कानूनी रूप से विवाहित के रूप में]। कानूनी रूप से विवाहित के रूप में पहचाने जाने के लिए, उन्हें नेपोलियन कोड के तहत शादी करनी होगी। अविश्वासियों [मुस्लिम धर्म में गैर-विश्वासियों] की व्यवस्था के अनुसार विवाह करना। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कोई मुसलमान मंत्री या डिप्टी मुस्लिम समुदाय के साथ इस अन्याय को ठीक करने में सक्षम नहीं रहे हैं। तो, हमारा महान हथियार [यह बंदूक या तलवार नहीं है] हमारे निर्माता से हमारी दुआ [वंदन] है। वह सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश और सर्वशक्तिमान हैं।

इनलल्लाह मा-अस साबिरीन।

अल्लाह उन लोगों के साथ है जो दृढ़ हैं।

आशा है अल्लाह धरती पर अपना न्याय स्थापित करे, ऐसा न्याय कि कोई भी मनुष्य इसके लिए पूर्ववत नहीं कर सकता, अल्लाह की कृपा से मुस्लिम समुदाय फल-फूल सकता है और समृद्ध हो
सकता है और इंसानियत को नफरत और बदले के बिना बचाया जा सकता है, लेकिन अल्लाह से प्यार और न्याय के साथ, और हमारे शिक्षक पवित्र पैगंबर मुहम्मद (स अ व स) की तरह, जिन्होने हमें सिखाया।

इंशा-अल्लाह, आमीन।